श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

१०

शहर मार्च - २०२२

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	करंच
(२)	स्वार्थी
(३)	समकित
(४)	स्वलिंग
(५)	निगोद
(६)	पुरिमुड्ढ
(७)	स्मरण
(८)	शिवयात्रा
(९)	आत्मबल
(१०)	गौण
(११)	चौविहार
(१२)	लक्ष्य
(१३)	ओकेन्द्रिय
(१४)	नवनीत
(१५)	गुड
(१६)	उष्ण
(१७)	बरसात
(१८)	कर्मानुसार
(१९)	संगम देव
(२०)	मोक्ष नगरी

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	कौशाम्बी
(२)	प्रवचनो
(३)	सम्यग दर्शन
(४)	स्थान दान
(५)	अवहेली
(६)	योनि
(७)	परोपकार
(८)	धनावह सेठ
(९)	धर्म
(१०)	अधर्म
(११)	त्रास
(१२)	श्री शांतिसूरि
(१३)	जगडुशाह
(१४)	भरत महाराजा
(१५)	अनाहारी
(५)	कही है
(६)	चंदन बाग
(७)	नारक
(८)	साधु
(९)	नपुंसक
(१०)	कपिल वगैरह
(११)	सागर में
(१२)	वचन
(१३)	गणधरो
(१४)	गाये
(१५)	भयंकर
(१६)	मात्र / भी
(१७)	तिर्यंच
(१८)	भावपूर्वक
(१९)	अनेक
(२०)	श्रमण करेंगे

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	गेय
(२)	योनि
(३)	स्थिति
(४)	अनागत काल

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	१
(२)	९	(७)	२
(३)	७	(८)	१०
(४)	८	(९)	४
(५)	३	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१५
(२)	६७
(३)	२०
(४)	१०
(५)	१८
(६)	२२९
(७)	१४
(८)	९८%
(९)	३०
(१०)	४५१४

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	१०
(२)	×	(२)	१७
(३)	×	(३)	११
(४)	✓	(४)	२५
(५)	✓	(५)	१४
(६)	×	(६)	८
(७)	✓	(७)	१९
(८)	×	(८)	२३
(९)	×	(९)	१३
(१०)	✓	(१०)	७

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

जांचनेवाले की सही

रीमार्क

प्रश्न - ८

१. प्रभु महावीर पौष वदी एकम को कौशांबी में आये और उसी दिन एक उग्र अभिग्रह लिया की द्रव्य से सूप के कोने में रहे हुए उडद के बाकुले क्षेत्र से, वहोराने वाले का एक पैर दहलीज के अंदर और एक बाहर हो, कालसे सब भिक्षाचर भिक्षा लेकर निवृत्त हुए हो तब आवसे, वहोराने वाली राजकुमारी हो, दासीपने प्राप्त हो, मस्तक मुंडित हो, पैरो मे बेडी, रुदन करती और अट्ठम तपवाली हो ऐसी कुंआरी स्त्री वहोरावे तभी वहोरावु अन्यथा उपवासी रहेंगे।

२. पच्चखाण बिना का तप फलदायी नही। अतिअल्प फल की प्राप्ति होती है। पाप से पीछे हटने, तन मन को संयम में लाने के लिये, कर्म की निर्जरा करने, विविध प्रकार के तप शास्त्रकारोंने बनाये है। तप करने के लिये मनोबल और आत्मबल को दृढ करने की आवश्यकता है। इस मनोबल और आत्मबल की वृद्धी के लिये पच्चखाण अति आवश्यक है। तप के साथ पच्चखाण अनिवार्य है।

३. योगीराज आनंदघन महाराज ने मन को वश करनेकी सज्झाय मे यह कहा है की पेट भरने, चारा खाने, घुमने गायें वन में जाती है पर उनका ध्यान अपने बछडों में होता है। पानी भरने गयी सहेलीयाँ हँसी ठिठोली करे पर उनका चित्त अपने बेडे में घडे पर होता है। नट का ध्यान उसकी दोरी मे, जुआरी का ध्यान अपने जुएं मे, उसीतरह हम व्यवहारीक क्रिया मे अपना ध्यान लक्ष्य को प्राप्त करने मे दौडता रहता है, क्रिया में रस जागृत होता नही. उसे लक्ष्यालक्ष्य कहते है।

४. साधक को जागृत करने के लिये श्री शांती सूरीश्वरजी म.सा. कहते है - हे जीव तू कहाँ कहाँ घूमा वह तूने जाना, अभी तू कहाँ है? कौन है? वर्तमान में पुण्ययोग से दुर्लभ ऐसे मनुष्यभव की प्राप्ती हुई उससे भी विशेष दुर्लभ ऐसे जिनेश्वर परमात्मा के वचनो की प्राप्ती हुई अब क्या बाकी है, सब कुछ मिला, अब लग जा उद्यम में भगीरथ पुरुषार्थ कर, कुछ भी असंभवित नही है। एकबार सम्यग्दर्शन पाने के लिये प्रयत्न कर।

५. जब जीव नवतत्व को जानता है, तब उसे अन्य कहीं भी जाने की जरुरत लगती नही, ज्ञान का अखूट खजाना उसे मिल जाता है। ज्ञान के प्रति उसका बहुमान भी उत्कृष्ट होता है। ऐसा ज्ञान, समज, सूक्ष्मता कहीं भी मिलना असंभवित है। ऐसे जाननेवाले साधक सम्यक्त्व को स्वामी है, और वो आगे बढकर नवतत्व न भी जाने, न समझे परंतु भावपूर्वक की जो श्रद्धा है तो वहाँ भी अवश्य सम्यग् दर्शन है।